उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस

32वाँ दो दिवसीय अधिवेशन

विषय : इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा

दिनांक : 18 एवं 19 नवम्बर, 2023

आयोजक : प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी

उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस द्वारा आयोजित दो दिवसीय वार्षिक अधिवेशन 18- 19 नवम्बर, 2023की शुरूआत हरिश्चन्द्र पी0जी0 कालेज मे हुई। अधिवेशन का मुख्य विषय ''इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा'' है। दो दिवसीय अधिवेशन के उदघाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो0 आनंद कुमार त्यागी ने कहा कि इतिहास तथ्य व सत्य पर आधारित अतीत और वर्तमान के बीच एक सेतु है। इतिहास की सामग्री अतीत कालीन ऐतिहासिक तथ्य होते हैं, जो इतिहास व वर्तमान का प्रतिनिधित्व करता हैं इतिहासकार तथ्यो की पारस्परिक भूमिका को रेखांकित करते हुए प्रो0 त्यागी ने कहा की सभी ऐतिहासिक तथ्य अपने युग के प्रतिभागी की ओर से प्रभावित इतिहासकार का व्याख्यात्मक विवरण होता है। यदि तथ्य अतीत का प्रतिनिधित्व करता है तो इतिहासकार वर्तमान का । उन्होंने बताया की इतिहास हमारे समाज का दर्पण होता है, जो भी समाज मे है व आने वाली पीढी के लिए एक डाक्यूमेन्ट है उन्होंने विश्व के अनेक सभ्यताओं के विलुप्त हो जाने के विषय में प्रकाश डाला और बताया कि यह एक इतिहासकार की जिम्मेदारी है कि वह इसके कारणों का पता लगाए। हिन्दुस्तान को ज्ञान की वजह से ही सोने की चिड़िया कहा जाता था। इतिहास के ज्ञान से राष्ट्रीयता की भावना पैदा की जा सकती है उन्होंने आहवाहन किया कि हम सबकी जिम्मेदारी है कि इतिहास का सही स्वरूप बच्चों के सामने प्रस्तुत करें ताकि नई पीढ़ी में राष्ट्रीयता की भावना पैदा हो। उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष प्रो0 इशरत आलम ने बताया कि विश्व इतिहास लेखन में राज्य और राजनीतिक प्रभाव किस प्रकार दिखता है। चीन और भारत के इतिहास लेखन में राजनीतिक परम्परा इसका उदाहरण है। इतिहास की विधियों जैसे तथ्यपरकता, यथार्थ, वैज्ञानिकता, निष्पक्षता आदि को इतिहास लेखन में लाना चाहिए उन्होंने मार्क्स, माओ, रूसी, जापानी इतिहासकारों का उदाहरण देकर सभी पक्षों का विश्लेषण किया। अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए हरिश्चन्द्र पी0जी0 कालेज के प्राचार्य प्रो0 रजनीश कुंवर ने कहा कि इतिहास वह आइना है जिसके सामने खडे होकर हम अपने अतीत और वर्तमान एवं भविष्य को साफ–साफ पढ सकते है। अपने को पहचान सकते है। इतिहास अतीत की कहानी मात्र नहीं अपितु वर्तमान की नींव और

भविष्य की कल्पना है। इतिहास मानव जीवन के महान कार्यों का वर्णन है। इतिहास मनुष्य समाज का उसके जीवन के सभी क्षेत्रों का विस्तृत अध्ययन है। प्रो0 कुँवर ने इतिहासपरक दृष्टिकोण को समझाते हुए कहा कि इतिहास अतीत को वर्तमान से जोडता है, हमें यह समझने मे मदद करता है कि हमारी दुनिया और हम कैसे बने। उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस के संस्थापक सचिव प्रो0 एस0एन0आर0 रिजवी ने बताया कि इस मंच की शुरूआत 1985 ई0 में हुई। इसका उद्देश्य हिन्दी भाषा मे इतिहास में शोध पत्र प्रस्तुत करने का मंच प्रदान करना है। इस मौके पर इतिहास विमर्श नामक स्मारिका और प्रो0 विश्वनाथ वर्मा द्वारा लिखित भारत और विश्व की प्राचीन सभ्यताएं नामक पुस्तक का विमोचन हुआ। दिनांक 18 नवम्बर को दो तकनीकी सत्रों में अधिवेशन सम्पन्न हुई जिसमें दो सौ प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया और अपने शोध पत्रों का वाचन किया। अधिवेशन का संचालन प्रो0 विश्वनाथ वर्मा एवं डा0 सरला सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 पंकज कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रों0 अनील कुमार, प्रों0 अशोक कुमार सिंह, प्रों0 अतुल सिन्हा, प्रों0 ओमप्रकाश श्रीवास्तव, प्रों0 हर्ष कुमार, प्रों0 विजय बहादुर यादव, प्रों रेनू शुक्ला, प्रों0 सुबोध कुमार, प्रो0 रागिनी श्रीवास्तव, प्रों0 ऋचा, प्रों0 अनुपम शाही, प्रो0 संगीता, प्रो0 राजकुमार गुप्ता, प्रो0 रमाकान्त, प्रो0 आनन्द शंकर चौधरी, प्रों0 दुष्यंत सिंह, प्रों0 एस एन वर्मा, डा0 शिवानन्द, डा0 रामआशीष आदि शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश कांग्रेस के दूसरे दिन समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि एवं महाविद्यालय के प्रावार्य प्रो0 रजनीश कुँवर तथा अध्यक्षता प्रो0 इशरत आलम अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ ने की। इतिहास की महत्ता हर दौर में प्रासंगिक है। कभी इसमें परिवर्तन नही होता। धर्म के हिसाब से इतिहास की अलग–अलग व्याख्या जरूर होती है। लेकिन इसका बदलता स्वरूप सभी को प्रभावित करता है। समय की प्रत्येक समाज में अलग व्याख्या है। आधुनिक युग में सामयिक वृतांत की अलग व्याख्या है। प्राचीन कथाओं में ऐतिहासिक इतिहास के दृश्य में निरंतर बदलाव होते रहते है। उक्त बाते समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो0 रजनीश कुँवर ने कही अधिवेशन के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो0 इशरत आलम ने किया। इस कार्यक्रम के संयोजक प्रो0 विश्वनाथ वर्मा ने बताया कि इस दो दिवसीय अधिवेशन में कुल 275 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए एवं सर्वसम्मति से पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष प्रो0 अनिरूद्ध पांडेय, उपाध्यक्ष अतुल कुमार सिन्हा,प्रो0 इशरत आलम,सचिव प्रो0 विजय बहादुर सिंह यादव,सहसचिव डॉ0 रामविलास भारती, प्रो0 रेणु शुक्ला, प्रो0 विश्वनाथ वर्मा सहित नई कार्यकारिणी के सदस्यों का सर्वसम्मति से निर्वाचन किया गया। अधिवेशन में आये लोगो का स्वागत एवं धन्यवाद प्रो0 विश्वनाथ वर्मा ने किया व संचालन प्रो0 विजय बहादुर सिंह यादव ने किया। अधिवेशन में मुख्य रूप से प्रो0एस0एन0आर0 रिजवि, प्रो0 हर्ष कुमार, प्रो0 अनीता प्रकाश, प्रो0 दुष्यंत सिंह, डॉ0 सरला

सिंह, प्रो0 अशोक कुमार सिंह, डॉ0 शिवानंद यादव, डॉ राम आशीष यादव, प्रो0 रागिनी श्रीवास्तव, शिवांगी चौबे, प्रीति वर्मा, संदीप शशांक वर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

नोट : कुल प्रतिभागियो की संख्या– 307

शोध–पत्र वाचन – 275

शिक्षक–165

शोधार्थी–75

विद्यार्थी–35

प्राचार्य
हरिश्चन्द्र पी० जी० कालेज
वाराणसी

प्रो0 विश्वनाथ वर्मा

संयोजक

उ0प्र0 इतिहास कांग्रेस

उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस

32वाँ
दो दिवसीय अधिवेशन

इतिहास-विमर्श

स्मारिका

दिनांक : 18 एवं 19 नवम्बर, 2023

विषय

इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा

• आयोजक •

प्राचीन इतिहास विभाग, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय

वाराणसी (उ.प्र.) पिन-221001

इतिहास-विमर्श

स्मारिका

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

(सम्बद्ध- महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस का ३२वाँ अधिवेशन

दिनांक : 18 नवम्बर एवं 19 नवम्बर, 2023

विषय

इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा

•

प्रो. (डॉ.) रजनीश कुँवर
प्राचार्य / संरक्षक

•

प्रो. (डॉ.) विश्वनाथ वर्मा
आयोजन सचिव

•

• *आयोजक* •

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय

वाराणसी (उ.प्र.) पिन-221001

प्रो. ए. के. त्यागी
कुलपति

Prof. A.K. Tyagi
Vice Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी-221002

Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221002

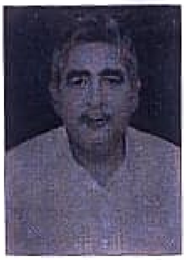

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मैदागिन, वाराणसी दिनांक 18-19 नवम्बर, 2023 को '**इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा**' पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित करने जा रहा है साथ ही इस अवसर पर एक स्मारिका का लोकार्पण भी किया जायेगा।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि संगोष्ठी में देश के प्रतिष्ठित विद्वान प्रतिभाग करेंगे जिनके विचारों से विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं समाज के सभी वर्ग लाभान्वित होंगे।

मैं संगोष्ठी के सफल आयोजन की कामना करते हुए आयोजन कार्य में लगें सभी सुधीजनों को साधुवाद देता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित।

प्रो. ए.के. त्यागी
कुलपति

प्रो. वन्दना सिंह
कुलपति
Prof. Vandana Singh
Vice-Chancellor

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर-2220003 (उ.प्र.)
Veer Bahadur Singh Purvanchal University
Jaunpur-222003 (U.P.)
E-Mail : vc_vbspuniversity@rediffmail.com
Tel : (O) + 91-5452-252222 (F) 252344

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस का 32वाँ अधिवेशन 18 एवं 19 नवम्बर, 2023 को भारत की सांस्कृतिक राजधानी काशी के हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हो रहा है। काशी विद्यानगरी होने के साथ-साथ धर्म एवं मोक्ष की नगरी भी है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार अध्यात्म की ज्ञान पिपासा के लिए लोग काशी आते हैं ठीक उसी प्रकार देश के विभिन्न इतिहासकार हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी में आयोजित दो द्विवसीय वार्षिक अधिवेशन में भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं गौरवशाली अतीत के अनछुए प्रसंगों को अपनी नवोन्मेषी शोधदृष्टि से नये आयाम प्रदान करेंगे।

मैं, आयोजक मण्डल एवं महाविद्यालय परिवार को इस आयोजन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस के 32वें अधिवेशन की सफलता की मंगलकामना करती हूँ।

अनन्त शुभकामनाओं के साथ,

वन्दना सिंह

प्रो. वन्दना सिंह
कुलपति

सेवा में,
प्रो. रजनीश कुँवर
प्राचार्य
हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
वाराणसी।

दिनांक : 21.10.2023

डॉ. अखिलेश कुमार सिंह
कुलपति
Dr. Akhilesh Kumar Singh
Vice-Chancellor

प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय
नैनी, प्रयागराज-211001
Prof. Rajendra Singh (Rajju Bhaiya) University
Naini, Praygraj-211001
Tel : (O) + 91-532-2256206
E-Mail : vcprsuprayagraj@gmail.com

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि ***हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मैदागिन, वाराणसी*** द्वारा दिनांक 18-19 नवम्बर 2023 को **'उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस'** के संयुक्त तत्त्वावधान में **'इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा'** विषयक दो-द्विवसीय संगोष्ठी का आयोजन एवं एक स्मारिका का लेखन करने जा रहा है।

इतिहास ज्ञान की वह शाखा है जिसमें हम मानव जाति से सम्बन्धित पिछली घटनाओं के अध्ययन के आधार पर किसी विशेष सभ्यता देश, अवधि इत्यादि से सम्बन्धित पिछली घटनाओं की निरंतरता एवं व्यवस्था की सहायता से सार्थक तथ्यों का अध्ययन कर इसे निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ तरीके से वर्णित किया जाना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इतिहास विषयक दृष्टिकोण हमारे वर्तमान दृष्टिकोण को विकसित करता है और वर्तमान में आने वाली समस्याओं को अतीत के ज्ञान की सहायता से किस प्रकार सुझलाये, इसमें सक्षम बनाता है।

स्मारिका के प्रकाशन से सुधी पाठकों की ज्ञान पिपासा का उपशमन करते हुए शिक्षा व्यवस्था में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन हो सकेगा, दोनों संस्थाओं एवं सुधी लेखकों, वैज्ञानिकों, चिनतकों को मैं इस सराहनीय कार्यों के लिए शुभकामना देता हूँ।

डॉ. अखिलेश कुमार सिंह
कुलपति

सेवा में,
प्रो. रजनीश कुंवर
प्राचार्य
हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
वाराणसी।

दिनांक : 04.11.2023

डॉ. बृज किशोर त्रिपाठी
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
वाराणसी

कार्यालय : क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी।
दूरभाष : 0542-2221000

पत्रांक .... दिनांक ....

शुभकामना सन्देश

यह जानकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मैदागिन, वाराणसी एवं उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस के संयुकत तत्त्वावधान में दिनांक 18 एवं 19 नवम्बर, 2023 को (द्विदिवसीय), उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस का 32वाँ वार्षिक अधिवेशन आयोजित किया जा रहा है। अधिवेशन का विषय है– **'इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा'**। विषय प्रासंगिकता, गवेषणीयता एवं गहन चिंतन से पूर्ण है। जिसमें नाना शैक्षिक संस्थानों से आहूत विद्वानों के वैदुष्यपूर्ण व्याख्यानों का न केवल श्रवण अपितु अधिवेशन में प्रकाशित स्मारिका में लिपिबद्ध रूप में अध्ययन का अवसर भी प्राप्त होगा।

मैं अधिवेशन के सफल आयोजन एवं स्मारिका के प्रकाशन हेतु अपना मंगल संदेश प्रेषित करता हूँ।

बृ. कि. त्रिपाठी
30.10.2023

डॉ. बृज किशोर त्रिपाठी

प्रोफेसर (डॉ.) ज्ञान प्रकाश वर्मा
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
मेरठ।

दूरभाष :
Tel : (O) - 0121-2400444, 9005148875
Office : Regional Higher Education Officer
E-Mail : rheomeerut@yahoo.com
www.rheomrt.org

<u>शुभकामना संदेश</u>

यह हर्ष का विषय है कि **हरिश्चन्द्र पी.जी. कॉलेज, वाराणसी** 32वाँ दो दिवसीय अधिवेशन (उ.प्र. इतिहास कांग्रेस) 18-19 नवम्बर 2023 को करने जा रहा है। यह अधिवेशन बेहद सफल रहेगा ऐसा मेरा विश्वास है। मैं, प्राचार्य, सचिव (प्रबंधतंत्र), आयोजन सचिव एवं महाविद्यालय परिवार और छात्र-छात्राओं को अधिवेशन के सफल होने की हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

06/11/2023

डॉ. ज्ञान प्रकाश वर्मा
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी,
मेरठ

प्राचार्य
हरिश्चन्द्र पी.जी. कॉलेज, वाराणसी।

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मैदागिन, वाराणसी-221001 (यू.पी.)
HARISHCHANDRA POST GRADUATE COLLEGE
Maidagin, Varanasi-221001 (U.P.)
☎ कार्यालय : 0542-2440042 फैक्स : 0542-2440942
www.hcpgcollege.edu.in
ESTD : 1866

पत्रांक / Ref. No. ....

दिनांक / Dated 06.11.2023

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस के 32वें दो दिवसीय अधिवेशन का आयोजन दिनांक 18 एवं 19 नवम्बर, 2023 को महाविद्यालय द्वारा किया जा रहा है।

इस अधिवेशन में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के श्रेष्ठ विद्वान भाग ले रहे हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों पर विचार-विमर्श के उपरान्त जो निष्कर्ष प्राप्त होगें, वे इस विषय के लिए महत्त्वपूर्ण होंगे।

इस अवसर पर आयोजकों द्वारा प्रकाशित स्मारिका 'इतिहास-विमर्श' के माध्यम से मैं अधिवेशन की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामना प्रदान करता हूँ।

Bimal Kumar Jain

विमल कुमार जैन

प्राचार्य

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मैदागिन, वाराणसी-221001 (यू.पी.)
HARISHCHANDRA POST GRADUATE COLLEGE
Maidagin, Varanasi-221001 (U.P.)
☎ कार्यालय : 0542-2440042 फैक्स : 0542-2440942
www.hcpgcollege.edu.in
ESTD : 1866

पत्रांक / Ref. No. ....   दिनांक / Dated 06.11.2023

शुभकामना सन्देश

उच्च शिक्षण संस्थानों का मुख्य उद्देश्य विविध सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं सृजनात्मक क्रिया-कलापों के माध्यम से छात्र-छात्राओं में विवेक एवं चिंतनशीलता का प्रादुर्भाव करना है जिसके लिए शिक्षायतन मुख्य आधार स्तम्भ है। इसी उद्देश्य से दिनांक 18 एवं 19 नवम्बर 2023 को महाविद्यालय द्वारा उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस का 32वाँ अधिवेशन आयोजित किया गया है। आयोजन के उद्देश्य एवं विद्वत-वरेण्यों द्वारा सफल विचार-मंथन हेतु महाविद्यालय लक्ष्याभिमुख है।

अधिवेशन के अवसर पर 'इतिहास-विमर्श' नामक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय हमारे सहयोगियों द्वारा लिया गया है, जिसके प्रति मैं शुभकामनाएँ देता हूँ साथ ही संयोजक बन्धुओं तथा महाविद्यालय परिवार के प्रति अधिवेशन की सफलता हेतु मंगल कामना करता हूँ।

प्रो. रजनीश कुँवर
प्राचार्य

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी

(सम्बद्ध- महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस का ३२वाँ अधिवेशन (दिनांक : १८-१९ नवम्बर, २०२३)

'इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा'

• मुख्य समितियाँ •

1. आयोजन समिति

1.	प्रो. रजनीश कुँवर (प्राचार्य)	प्रो. विश्वनाथ वर्मा	प्रो. रागिनी श्रीवास्तव
2.	प्रो. महिमा मिश्रा	प्रो. अनिल कुमार	प्रो. ऋचा सिंह
3.	प्रो. अनुराधा राय	डॉ. देवेन्द्र प्रताप सिंह	

2. स्वागत समिति

1.	प्रो. पंकज कुमार सिंह	प्रो. प्रभाकर सिंह	प्रो. अनीता सिंह
2.	प्रो. संगीता श्रीवास्तव	प्रो. बी.के. निर्मल	प्रो. जगदीश सिंह
3.	प्रो. आनन्द कुमार द्विवेदी	प्रो. सुबोध कुमार	प्रो. संजय श्रीवास्तव
4.	प्रो. अशोक कुमार सिंह (वाणिज्य)	प्रो. अशोक कुमार सिंह (रसायन)	प्रो. ममता वर्मा

3. पंजीयन समिति

1.	प्रो. अनुपम शाही	प्रो. शुभ्रा सिंह	प्रो. कनकलता विश्वकर्मा
2.	डॉ. शिवानन्द यादव	डॉ. वंदना पाण्डेय	डॉ. प्रज्ञा ओझा
3.	डॉ. दुर्गेश यादव	डॉ. राहुल रंजन	

4. भोजन एवं जलपान व्यवस्था समिति

1.	प्रो. अनिल कुमार	प्रो. गजेन्द्र दास	डॉ. राकेश मणि मिश्रा
2.	डॉ. योगेन्द्र प्रसाद	डॉ. श्री प्रकाश गुप्ता	

5. अनुशासन एवं सत्र व्यवस्था समिति

1.	प्रो. अशोक कुमार सिंह (मुख्य नियन्ता)	डॉ. राम आशीष यादव	डॉ. अजय कुमार गौतम
2.	डॉ. सत्येन्द्र कुमार सिंह	डॉ. अमित कुमार	डॉ. संगीता शुक्ला
3.	डॉ. संजय कुमार सिंह	डॉ. धीरज कुमार सिंह	डॉ. रमेश कुमार

6. मुद्रण, प्रचार एवं मंच व्यवस्था

1.	डॉ. राम आशीष यादव	डॉ. आलोल कुमार	डॉ. ओम शर्मा
2.	डॉ. धीरज कुमार	डॉ. दर्शन शर्मा	डॉ. रविकान्त कसौधन
3.	डॉ. राजेन्द्र कुमार यादव	डॉ. प्रमोद कुमार	डॉ. निखिल कुमार
4.	सुश्री जान्हवी	सुश्री दिव्यानी बरनवाल	डॉ. श्रीबाबू जी

7. आवास एवं यातायात व्यवस्था समिति

1. डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
2. डॉ. धर्मेन्द्र कुमार गुप्ता
3. डॉ. सोनल सिंह
4. डॉ. विवेक यादव

डॉ. करुणेश ओझा
डॉ. विनीत कुमार
डॉ. सारांश लोहिया
डॉ. गरिमा सिंह

डॉ. सीमा सिंह
डॉ. अनिल कुमार
डॉ. दिव्यानी बरनवाल

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

(सम्बद्ध- महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस का 32वाँ अधिवेशन (18 एवं 19 नवम्बर, 2023)

विषय : ''इतिहास : अतीत एवं वर्तमान विषयक अवधारणा''

कार्यक्रम

दिनांक/समय	कार्यक्रम-विवरण	स्थल
18.11.2023 9 बजे प्रातः से प्रारंभ	पंजीकरण एवं संगोष्ठी सामग्री वितरण	भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला
	उद्‌घाटन समारोह : दिनांक-18 नवम्बर, 2023 (शनिवार)	
प्रातः 10:30 बजे से अपराह्न 1:00 बजे तक	• मंच आपूर्ति • दीप प्रज्ज्वलन • **सरस्वती गीत** : महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा • **अतिथि स्वागत** : माल्यार्पण, बैज, अंगवस्त्रम्, स्मृति चिह्न द्वारा • **स्वागत गीत** : महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा • **महाविद्यालय परिचय/स्वागत उद्‌बोधन** : प्रो. (डॉ.) रजनीश कुँवर, प्राचार्य • **कुलगीत** : महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा • **पुस्तक लोकार्पण** : '**इतिहास**' (स्मारिका), '**भारत एवं विश्व प्राचीन सभ्यताएं**' (पुस्तक- प्रो. विश्वनाथ वर्मा) एवं '**पिछले अधिवेशन की कार्यवृत्ति**' • **विषय प्रवर्तन** : प्रो. विश्वनाथ वर्मा, प्राचीन इतिहास विभाग • **विशेष वक्तव्य (एक)** : प्रोफेसर हर्ष कुमार, अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद • **विशेष वक्तव्य (दो)** : प्रो. मानवेन्द्र सिंह पुंडीर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्याल, अलीगढ़ • **विशेष वक्तव्य (तीन)** : डॉ. अनीता प्रकाश, गाजियाबाद • **बीज वक्तव्य** : प्रो. इशरत आलम, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्याल, अलीगढ़ • **मुख्य अतिथि** : प्रो. आनन्द कुमार त्यागी (कुलपति), महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी • **कार्यक्रम अध्यक्ष** : प्रो. रजनीश कुँवर, प्राचार्य, हरिश्चन्द्र पी.जी. कॉलेज, वाराणसी • **धन्यवाद-आभार** : प्रो. रागिनी श्रीवास्तव, प्राचीन इतिहास विभाग हरिश्चन्द्र पी.जी. कॉलेज, वाराणसी • **संचालन** : प्रो. रागिनी श्रीवास्तव एवं प्रो. ऋचा सिंह	
अपराह्न 1:00 बजे से अपराह्न 2:00 बजे तक	**भोजनावकाश**	

दिनांक : 18 नवम्बर, 2023 (शनिवार)

प्रथम तकनीकी सत्र

अपराह्न 02:00 बजे से अपराह्न 05:00 बजे तक	प्राचीन इतिहास मध्यकालीन इतिहास आधुनिक इतिहास	श्याम मोहन अग्रवाल समिति कक्ष कक्ष सं.-एन.वी. 4 कक्ष सं.-एन.वी. 3
05:00 बजे से	जल-पान	

दिनांक : 19 नवम्बर, 2023 (रविवार)

द्वितीय तकनीकी सत्र

प्रातः 10:00 बजे से अपराह्न 01:00 बजे तक	प्राचीन इतिहास मध्यकालीन इतिहास आधुनिक इतिहास	श्याम मोहन अग्रवाल समिति कक्ष कक्ष सं.-एन.वी. 4 कक्ष सं.-एन.वी. 3

दिनांक : 19 नवम्बर, 2023 (रविवार)

समापन समारोह

अपराह्न 01:00 बजे से 02:00 बजे तक	• दीप प्रज्ज्वलन • **सरस्वती गीत :** महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा • **अतिथि स्वागत :** माल्यार्पण, बैज, अंगवस्त्रम्, स्मृति चिह्न द्वारा • **स्वागत गीत :** महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा • **महाविद्यालय परिचय/स्वागत उद्बोधन :** प्रो. (डॉ.) रजनीश कुँवर, प्राचार्य • **कुलगीत :** महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा • **विशिष्ट अतिथि :** प्रो. ओम प्रकाश श्रीवास्तव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद • **विशिष्ट अतिथि :** प्रो. जे.एन. पाल, पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद • **मुख्य अतिथि :** प्रो. अतुल कुमार सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, रूहेलखण्ड, बरेली • **कार्यक्रम अध्यक्ष :** प्रो. रजनीश कुँवर, प्राचार्य, हरिश्चन्द्र पी.जी. कॉलेज, वाराणसी • **धन्यवाद-आभार :** प्रो. विश्वनाथ वर्मा, प्राचीन इतिहास विभाग हरिश्चन्द्र पी.जी. कॉलेज, वाराणसी • **संचालन :** प्रो. रागिनी श्रीवास्तव एवं प्रो. ऋचा सिंह	श्याम मोहन अग्रवाल समिति कक्ष
02:00 बजे से	**भोजनावकाश**	

सम्पादक की लेखनी से .....

'इतिहास-विमर्श' प्रस्तुत अधिवेशन की अभिमुखीय पत्रिका मात्र है। इतिहास चिंतन के उद्‌गम के परिप्रेक्ष्य में अलग-अलग विशिष्ट परम्परागत धारणाएँ रही हैं। इसका उदय बौद्धिक कार्य-व्यापार के विराट उद्वेग की अभिव्यक्ति के रूप में हुआ। इति-ह-आस तीन शब्दों के सम्मिलित स्वरूप से इतिहास के रूप में व्यवहृत है, जिसका अर्थ होता है- निश्चित रूप से ऐसा हुआ। इस व्यवस्था के अनुसार अतीत के जिन वृतान्तों को विश्वास के साथ प्रमाणित किया जाय उसे इतिहास की श्रेणी में रखा जा सकता है। इतिहास का ज्ञान किसी सामान्य नियम की खोज न कर किसी घटना विशेष को समझने की चेष्टा है।

इस तथ्य के अत्यधिक प्रमाण उपलब्ध हैं कि भारत में इतिहास को अत्यन्त प्राचीन काल से ही गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता रहा है। ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद् पुराण आदि में ज्ञान की एक शाखा के रूप में इसे इतिहासवेद की संज्ञा से अभिहित किया गया है। मुख्यतः इतिहास पुराण दोनों सम्मिलित रूप से उल्लिखित हैं। इतिहास को वेद कहना ही इस शास्त्र अर्थात् इतिहास के प्रति भारतीय जनमानस के दृष्टिकोण का पर्याप्त परिचय प्रस्तुत करता है, इसी परिप्रेक्ष्य में वेदों को अपौरूषेय की संज्ञा दी गयी है। वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति में प्रारम्भिक काल से ही भारतीयों में ऐतिहासिक साहित्य सृजन का उद्‌भव हो चुका था, जिसका संकेत इतिहास, पुराण और इतिहास-पुराण के रूप में अनेकत्र किया गया है।

देश-काल के परिवेश में घटित महत्त्वपूर्ण घटनाएँ इतिहास संज्ञक हैं। व्यतीत अतीत का अवदान वर्तमान है। यद्यपि भारतीय इतिहास की विचारधारा का आधुनिक रूप पाश्चात्य चिंतन का युग है। वर्तमान में पश्चिमी जगत् से विविध प्रकार के अन्तर्विरोधी प्रवृत्तियों का अभ्युदय हो रहा है। इस संक्रमणयुगीन स्थिति में भारतीय वाङ्मय में इतिहास-चिंतन की महती आवश्यकता है। इतिहासकार समसामयिक रूचि तथा आवश्यकता के अनुसार अतीत की घटनाओं का निरूपण करता है। अतः इतिहासकार अतीत और वर्तमान के मध्य एक सेतु और सेतु का प्रकाश स्तम्भ भी होता है, जो अतीत की घटनाओं का अवलोकन कर वर्तमान को प्रशिक्षित कर सुखद भविष्य का निर्माण करता है।

'इतिहास-विमर्श' इस अधिवेशन की अभिव्यक्ति है। अधिवेशन की नियोजना के प्रेरणास्रोत महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य प्रो. (डॉ.) रजनीश कुँवर जी के कुशल संरक्षण, आशीर्वाद एवं सहृदयी प्रबन्धक श्री बिमल कुमार जैन जी के प्रोत्साहन से हम सभी प्रोत्साहित होकर अभिभावक-तुल्य अंग्रजों एवं समकक्ष मित्रों के सहयोग से विद्वत-वरेण्यों को आमंत्रित कर विचार-विमर्श नियोजित करने एवं सार्थक निष्कर्ष अर्जित करने की अभिलाषा से अधिवेशन हेतु संकल्पित हुए हैं।

• **प्रो. विश्वनाथ वर्मा**

विषय-क्रम

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं.
भारतेन्दु : राष्ट्रवादी दृष्टि और व्यक्तित्व	–प्रो. विश्वनाथ वर्मा	[illegible]
काशी का अतीत	–प्रो. विश्वनाथ वर्मा	[illegible]
इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति	–डॉ. कुंवर बहादुर कौशिक	[illegible]
असहयोग आंदोलन और कानपुर की हिन्दी पत्रकारिता (1920 से 1929 की प्रमुख राष्ट्रीय घटनाक्रम के परिप्रेक्ष्य में)	–डॉ. (श्रीमती) सुमन शुक्ला	[illegible]
हिन्द-यवन मुद्राओं पर लक्ष्मी	–डॉ. आरती गुप्ता	[illegible]
बौद्ध एवं जैन साहित्य में पर्यावरण चेतना एक सूक्ष्म अवलोकन	–डॉ. नीलम सोनी	[illegible]
बुद्ध काल में लिपि एवं लेखन कला का आर्विभाव	–प्रीति वर्मा	[illegible]
मौर्योत्तर कालीन व्यापार एवं समाज का अर्न्तसंबंध : एक अध्ययन	–संदीप शशांक वर्मा	[illegible]
नहपान के लेखों में निर्दिष्ट संवत्	–सुरजीत पाल	[illegible]
1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका	–डॉ. आशीष कुमार त्रिवेदी	[illegible]
आचार्य विनोबा भावे : समाज सुधारक, और आध्यात्मिक नेता	–अभिषेक तोमर –प्रो. ए.वी. कौर	35
आजाद हिन्द फौज के विरुद्ध ब्रिटिश अभियोग	–पिंकी प्रजापति	36
उन्नीसवीं शताब्दी का सामाजिक परिदृश्य : (कानपुर के परिप्रेक्ष्य में)	–डॉ. जितेन्द्र सिंह	[illegible]
सामाजिक समरसता और सनातन समाज	–प्रो. आराधना –डॉ. मोहित कुमार	[illegible]
AIPAN ART : BRIDGING TRADITION AND MODERNITY AMIDST MIGRATION	–Vishal Choudhary –Shubhangi Joshi	[illegible]
बौद्ध साहित्य में वर्णित काशी एक अवलोकन	–डॉ अंजू लता श्रीवास्तव	[illegible]
रामसेतु का ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्त्व	–डॉ. शालिनी मिश्रा	[illegible]
DR. AMBEDKAR AN ORGANIC INTELLECTUAL OF INDIA	–Chandan Kumar Ram	[illegible]
EPISTEMOLOGY OF PRIMARY SOURCES : A CRITICAL INQUIRY OF MODERN HISTORIOGRAPHY WITH SPECIAL REFERENCE TO INDIA AND EUROPE	–Dr. Vikram Harijan	40
IMPACT OF PARTITION: IN INDIAN POLITICAL SCENARIO	–Utkarsh Singh	40
NARRATIVES OF NATIONHOOD: EXPLORING NATIONALIST TRENDS IN COLONIAL-ERA HINDI POETRY	–Rahul Prasad Patel	[illegible]
गुप्तकालीन भूमिदान : भू राजनैतिक व्यवस्था के विशेष संदर्भ में	–डॉ. राम प्रकाश यादव	41
तुगलककालीन शासकों के प्रशासनिक एवं आर्थिक सुधार	–धीरज कुमार दीपक	[illegible]
औपनिवेशिक न्यायिक व्यवस्था और भारतीय राष्ट्रवाद	–सूरज नाथ	[illegible]
नाथ सम्प्रदाय में योग का स्वरूप	–प्रो. विजय बहादुर सिंह यादव –सुदेश कुमार	[illegible]

- नेपाल के राणाओं के शासनकाल में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का एक ऐतिहासिक अध्ययन –डॉ. दीपक कुमार 43
- थारू जनजाति का प्रवासन : ऊधम सिंह नगर जिले के संदर्भ में –नीरज राणा 44
- प्राचीन भारत में सामान्य स्त्रियों की द्वितीयक सामाजिक-आर्थिक स्थिति : एक आलोचनात्मक अध्ययन –योगेश कुमार 44
- दोआब क्षेत्र पर सुल्तानों का आर्थिक व प्रशासनिक नियंत्रण (1200 से 1400 ई.) –सौरभ प्रताप सिंह 45
- पूर्व मध्यकाल सामाजिक आर्थिक परिवर्तन का काल –दिव्या बरनवाल 45
- मध्य भारत मे शिव का स्वरूप (चंदेल-शिल्प के विशेष संदर्भ में) –शिवांगी चौबे 46
- कला में सौन्दर्य-बोध –डॉ. उपमा वर्मा 47
- जैन कला में सरस्वती का अनुशीलन –छाया यादव 47
- GODDESS WORSHIP IN PRE HISTORIC INDIA -Prof. Ragini Srivastava 48
- IMPORTANTS OF JAPAN'S BUDDHISM AND MONASTERIES -Km Avedita Mishra 49
- PHOENIX RISES: AN INVESTIGATIVE STUDY OF THE STEADY RISE OF PARTITION REFUGEES -Aditi Singh 49
- जनपद शाहजहाँपुर का ऐतिहासिक अध्ययन –मोहित कुमार शर्मा 50
- वाराणसी में पर्यटन का इतिहास, विकास, एवं संभावनाएँ –डॉ. रविन्द्र प्रताप सिंह 50
- भारत की साम्प्रदायिक सहिष्णुता : एक दृष्टि –डॉ. रमेश प्रताप सिंह 51
- राजा राममोहन राय द्वारा सती प्रथा के विरुद्ध चलाए गए आंदोलन में जन समुदाय के सहयोग की स्थिति –शिवराज सिंह –डॉक्टर किरन त्रिपाठी 52
- नेतृत्व-एक ऐतिहासिक अध्ययन –अवनीश कुमार यादव 53
- जैन धर्म में मानसिक शांति एवं अहिंसा –काजल गिरि 53
- प्राचीन भारतीय लोक परम्परा में यक्ष्य पूजा के विभिन्न सूत्र –प्रो. कविता सिंह 54
- EXPLORATION OF ARCHAELOGICAL SITE OF MUKARI -Tejendra Pratap Singh 54
- अवध किसान आंदोलन में सामाजिक-धार्मिक सौहार्द –सुरजीत पाल 55
- सल्तनत कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति –दीपक कुमार –डॉ. किरन त्रिपाठी 55
- बौद्ध परम्परा में महासांघिक विचारधारा का नैतिक विकास –डॉ. इन्द्रजीत सिंह 56
- बौद्ध धर्म के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता –अमित कुमार 56
- गांधी चिन्तन : स्त्रियों के सन्दर्भ में –प्रो. (श्रीमती) महिमा मिश्र 57
- गांधी चिन्तन : विवाह संस्था में सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में –प्रो. (श्रीमती) महिमा मिश्र 57
- गांधी जी के सिद्धान्तों की आधुनिक प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक विश्लेषण –ज्ञान प्रकाश मिश्र –डॉ. राकेश कुमार यादव 58
- भारत में महिला सशक्तिकरण (विभिन्न योजनाओं के परिप्रेक्ष्य में) –डॉ. ऋचा पाठक 58

इतिहास-विमर्श

• INDIAN ECONOMY: RELEVANCE OF GANDHI'S VIEWS ON ECONOMIC DEVELOPMENT	–A.K. Gautam	54
• काशी विश्वनाथ मन्दिर का बनारस के उत्थान में योगदान : 21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में सार संक्षेप	–ज्योति श्री	57
• RELEVANCE OF GANDHIAN ECONOMIC THOUGHT IN PRESENT-DAY INDIA	–Karunesh Ojha	59
• बौद्ध धर्म और अवलोकितेश्वर बोधिसत्व	–किरन यादव	60
• मुगलकाल में हिन्दू-शिक्षा (1526-1707 ई.)	–डॉ. रवि कुमार प्रजापति	61
• भारतीय महिला मताधिकार आन्दोलन में महिला भारतीय संघ की भूमिका	–पूर्वा दीक्षित	61
• जनपद शाहजहाँपुर का ऐतिहासिक अध्ययन	–मोहित कुमार शर्मा	62
• बौद्ध कला में शालभंजिका प्रतीक : सांस्कृतिक अध्ययन	–मदन मोहन पाठक	62
• SCIENTIFIC AND TECHNOLOGICAL DEVELOPMENT IN INDIA AFTER INDEPENDENCE (1947-1998)	–Anupma Singh	63
• बौद्ध धर्म का भारतीय समाज पर प्रभाव	–मनोज कुमार	63
• FREEING UP OF RELIGIOUS FROM THE BRITISH CONTROL-THE CASE OF AKALI MOVEMENT	–Harsh Chaudhary	64
• IDENTIFYING THE PLACE OF BANDA'S ARRIVAL IN SONIPAT IN THE SARKAR AND SUBA OF DELHI : A REAPPRAISAL	–Prof. Vighnesh Kumar –Manpreet Caur Kanishka	65
• राम प्रसाद बिस्मिल : काकोरी घटना के अमर नायक	–विवेक कुमार	65
• सनातन धार्मिक व्यवस्था मे अवतारवाद	–बलराम पाठक	66
• पल्लव कला	–डॉ. आभा पाल	66
• अशोक के धम्मनीति की वर्तमान में प्रासंगिकता	–प्रमोद कुमार रजक	67
• 1857, नवाबगंज (ओबरी) के युद्ध में राजा बलभद्र सिंह की भूमिका	–नागेन्द्र प्रताप सिंह	67
• हिंदी सिनेमा में दलित-आदिवासी विमर्श	–अरविन्द यादव	68
• प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति और वैश्वीकरण की अवधारणा	–डॉ. जय प्रकाश	69
• 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में वाराणसी/काशी	–आदेश गुप्त	69
• ब्रिटिश कालीन भारत में स्वदेशी आन्दोलन पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव	–कु. शैली	70
• संस्कृत और इतिहास का अंतःसम्बन्ध	–डॉ. रविकान्त कसौधन	70
• प्राचीन भारतीय विचारधारा और महात्मा बुद्ध	–डॉ. सरला सिंह	71
• कौटिल्य के आर्थिक एवं सामाजिक विचारों की प्रासंगिकता	–प्रो. जगदीश सिंह	71
• मीरजापुर जनपद की प्राकृतिक सम्पदाओं का ऐतिहासिक अध्ययन	–प्रो. इन्दुभूषण द्विवेदी	72
• राहुल सांकृत्यायन का किसान आंदोलन में योगदान	–विवेक कुमार 'अमर'	72
• युग द्रष्टा कबीर	–प्रो. ऋचा सिंह	73
• भारतीय संस्कृति और कबीर	–डॉ. राम आशीष	74
• 18वीं शताब्दी में बनारस के व्यापारियों की आर्थिक स्थिति	–डॉ. संदीप कुमार गौरव	74
• भारत की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के अध्ययन में बेलन		75

घाटी के भूतात्विक जमावों का महत्व –डॉ. विनोद यादव 76
- REVISITING THE BUSINESS HISTORY OF INDIA : CHALLENGES, PROSPECTS, AND THE WAY FORWARD –Dr. Jyotasana 76
- 1857ई. की क्रांति बेगम : हजरत महल की भूमिका –विपिन कुमार चौधरी 77
- प्राचीन भारतीय दण्ड व्यवस्था और वैदिक ग्रंथों में दण्ड व्यवस्था –खुशी ठाकुर 77
- प्राचीन भारत में आर्थिक तथा सामाजिक विचारों का सम्बन्ध –प्रो. रमाकान्त 78
- वज्रयान सम्प्रदाय –सौरभ चौबे 78
- NATUROPATHY DESCRIBED IN THE VEDAS AND ITS USEFULNESS : A HISTORICAL OVERVIEW –Dr. Ravindra Kumar 79
- बंजारी पहाड़ी से प्राप्त पुरावशेष –परमदीप पटेल 79
- भारत विभाजन के विभीषिका का सच : एक ऐतिहासिक अवलोकन –डॉ. अमर कृष्ण यादव 80
- भारत विभाजन –प्रो. एस.एन. वर्मा 81
- TANJORE EXPEDITIONS: AN ASSESSMENT IN THE LIGHT OF MOHAMMAD ALI'S LETTER TO THE COURT OF DIRECTORS (1777) –Mir Hussain Naqvi 82
- स्वराज तथा स्वदेशी के सन्दर्भ में गांधी का दृष्टिकोण एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन 1920-1935 : एक अध्ययन –डॉ. देवेन्द्र नाथ गिरि 82
- मध्य प्रदेश जैन अभिलेखों में महिलाएँ –दीक्षा पाठक 83
- THE IMPORTANCE OF MANIKARNIKA GHAT –Prof. V. N. Verma 83
- बौद्ध साहित्य में वर्णित प्राचीन काशी के उद्योग-धन्धे –पिंकी गुप्ता 84
- भारतवर्ष का नामकरण : विविध साक्ष्य –प्रो. महेश प्रसाद अहिरवार, –अभिषेक कुमार पाण्डेय 84
- प्राचीन भारतीय इतिहास में पुरालेखकीय स्रोत के रूप में अभिलेख : एक परिचय –प्रीति गुप्ता 84
- उत्तर भारत में कृषि का प्रारम्भ और विकास –सौरभ सिंह 85
- DEVELOPMENT OF POLITICAL PARTIES IN INDIA: A SPECIAL REFERENCE TO BHARTIYA JAN SANGH –Dr. Rajkishor 85
- प्राचीन भारत में जलाशयों का धार्मिक एवं पर्यावरणीय महत्व –डॉ. आरती कुमारी 86

ꕥꕥ